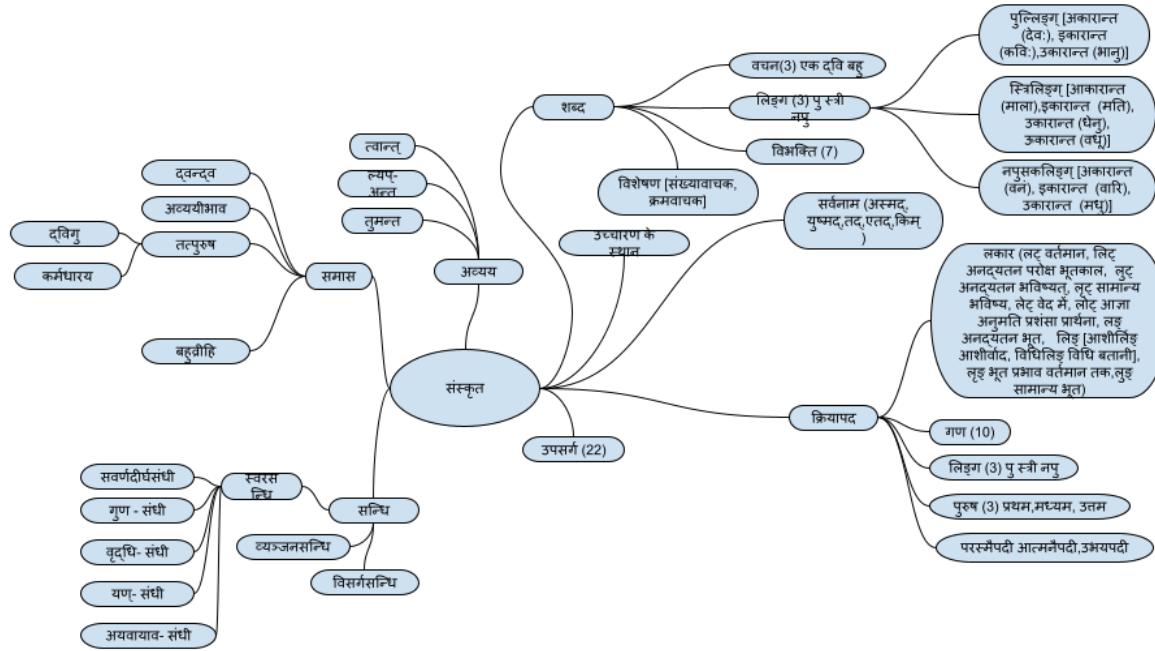


Learning Sanskrit Yogesh

Just ontologies, no actual tables, lay of the land doc



Introduction

संस्कृत व्याकरणाचा प्रमुख आधार, पाणिनी रचित 'अष्टाद्यायी'. त्यात ८ अध्याय, प्रत्येकात ४ चरण, असे ३२ चरण आहेत. एकूण ३१६६ सूत्र आहेत.

त्रिमनी: पाणिनी (अष्टाध्यायी), कात्यायन(वर्तिक), पतंजली (महाभाष्य)

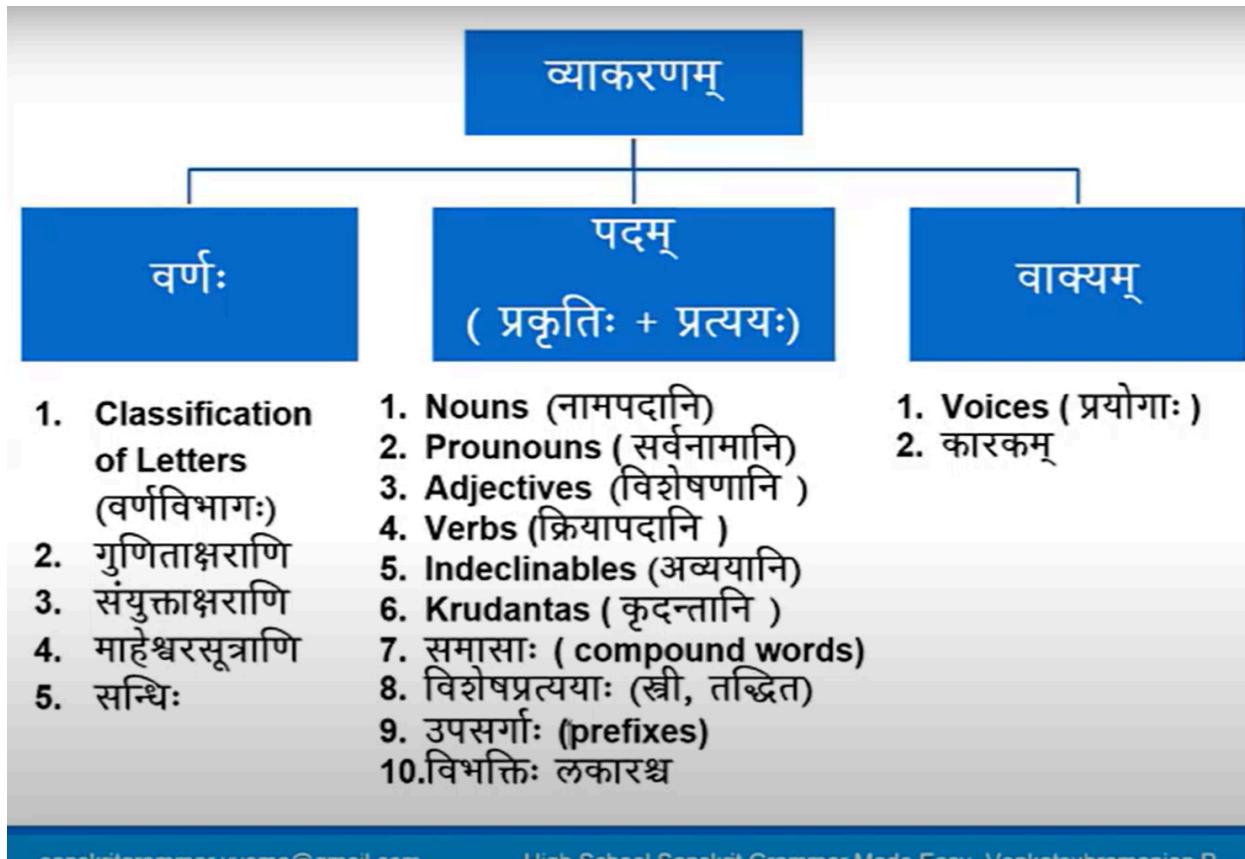
‘लघु सिद्धांत कौमदी’ अष्टाद्यायीवर आधारित आहे.

भट्टोजी दीक्षित : सिद्धांत कौमुदी

वरदेराजाचार्यः लघु/मध्य/सार/ सिद्धांत कौमुदी.

Primary References

- [High School Sanskrit Vyoma](#)
 - [Digital Sanskrit BORI](#)



उच्चारण के स्थान

संस्कृत अक्षराः/वर्णाः

- स्वराः (१३) अच् - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ऋ, लृ ए, ऐ, ओ, औ
 - व्यञ्जनानि (३३) हल् - क् ख् श् ष् स् ह्
 - आयोगवाह स्वराश्रितौ (४): - अनुस्वारः विसर्गः जीव्हामूलीय (':' + क /ख|अंतःकरण), उपधमानीय (':+प/फ| गुरोः परम)
- एकूण ५० वर्ण आहेत.

स्वराः

'स्वयं राजन्ते इति स्वरः'

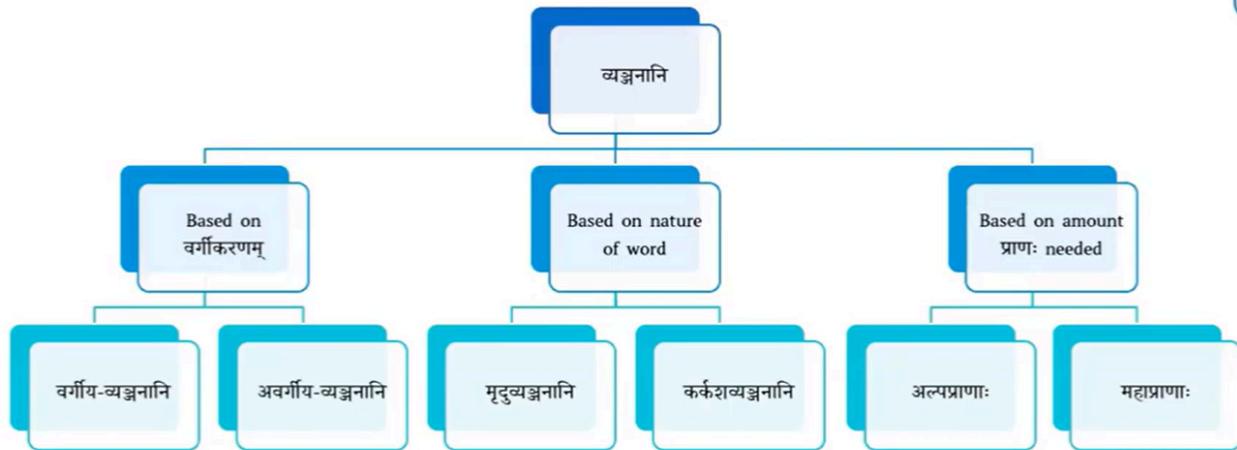
हस्व स्वर (उच्चारण में एक मात्रा का समय) - अ, इ, उ, ऊ, ल

दीर्घ स्वर (उच्चारण में दो मात्रा का समय) - आ, ई, ऊ, ऋ (लु स्वर का दीर्घ रूप नहीं होता) ए, ऐ, ओ तथा औ

प्लुत स्वर (उच्चारण में तीन मात्राओं का समय) - ओउम् में 'ओ' प्लुत स्वर है

व्यञ्जनानि

‘व्यजते वर्णान्तर संयोगेन द्योतते ध्वनिविषेषो येन तद् व्यञ्जनम्’



कवर्ग (कण्ठ)- क ख ग घ ङ

चर्वर्ग (तालु) - च छ ज झ ञ

टर्वर्ग (मूर्धा) - ट ठ ड ढ ण

तर्वर्ग (दन्त) - त थ द ध न

पर्वर्ग (ओष्ठ)- प फ ब भ म

अवर्गीय

- अन्तःस्थ वर्ण- य र ल व
- ऊष्म वर्ण - श(like च), ष (ट), स(त), ह
- 'ळ' not there except in Vedas.

संयुक्त वर्णद्वयम् -

क् + ष् + अ = क्ष

ज् + ञ + अ = ञ

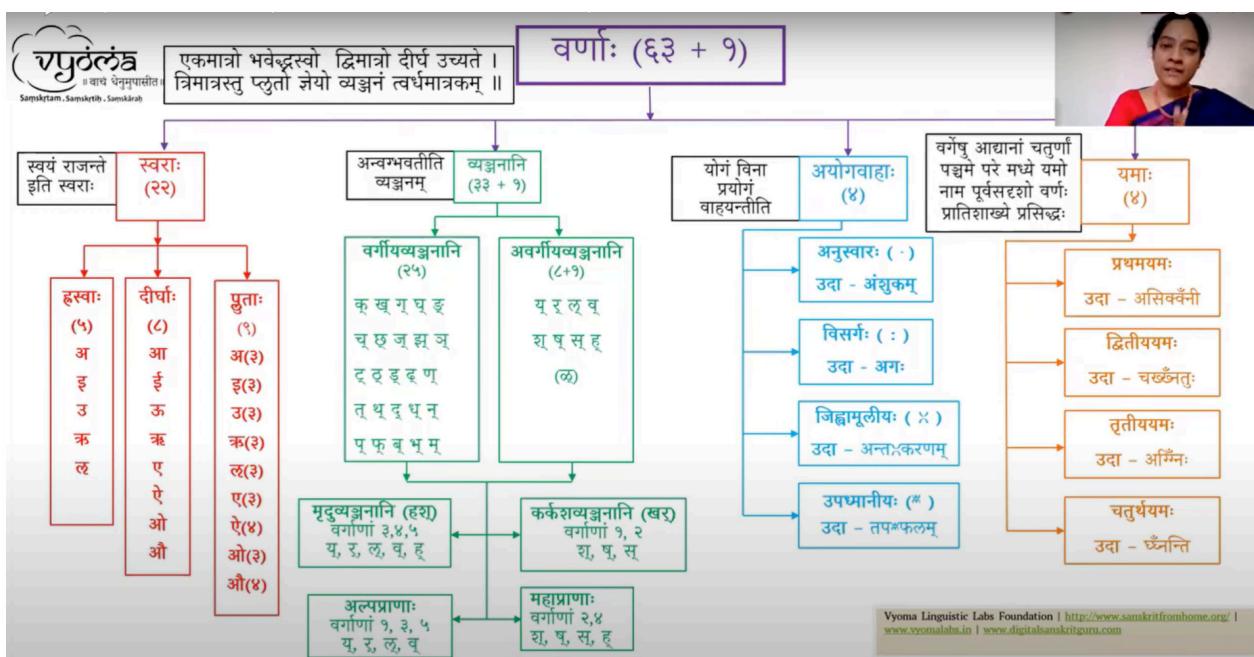
त् + र = त्र

श् + र = श्र

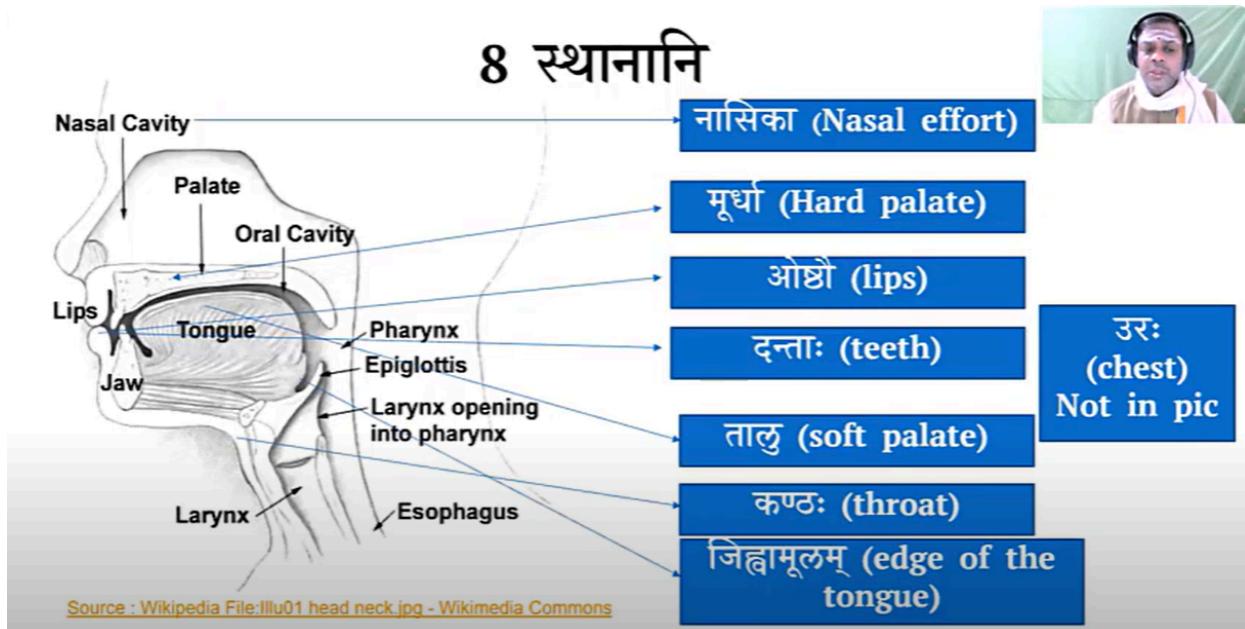


sanskritgrammar.vyoma@gmail.com

High School Sanskrit Grammar Made Easy- Venkatsubramanian P



उच्चारणस्थानानि



1. कण्ठ-अ, आ, कवकीय वर्ण (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्), ह, विसर्ग(ঁ:)।
 2. ताल- इ, ঈ, चवर्णीय वर्ण (চ্, ছ্, জ্, ঝ্, ঃ), যু, শু।
 3. मूर्धा- ঋ, ঋ ট্বর্গীয় ঵র্ণ (ট্, ঠ্, ড্, ণ্), ট, ষ।
 4. दन्त-লू, तवर्णीय वर्ण (ত্, প্, দ্, ন্). [লু, স্।
 5. ओष्ठ- ত, ঊ, पठगय वर्णो (পু, ফু, মু, ম)।
- ए, এ কা उच्चारणस्थान-कण्ठतात
ओ, ঔ কা उच्चारणस्थान-कण্ঠোষ्ठ
ব্ কা उच्चारणस्थान-दन्तोष्ट

वर्णों का उच्चारण स्थान

स्थान	स्वर	व्यंजन	अन्तस्थ	उष्म
1. कण्ठ	अ, आ	क, ख, ग, घ, ङ्	-	ह, अः
2. तालु	इ, ई	च, छ, ज, झ, झ्र	य	श
3. मूर्द्धा	ऋ, ॠ	ट, ठ, ड, ढ, ण	र	ष
4. दन्त	लृ	त, थ, द, ध, न	ल	स
5. ओष्ठ	उ, ऊ	प, फ, ब, भ, म	-	-
6. नासिका	-	अं, इं, ऊं, ण, न्, म्	-	-
7. कण्ठतालु	ए, ऐ	-	-	-
8. कण्ठोष्ठ	ओ, औ	-	-	-
9. दन्तोष्ठ	-	-	व	-

घोष-अघोष, अल्पप्राण-महाप्राण तालिका

स्थान	अघोष		घोष		अघोष		घोष	
	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	
कण्ठ	क	ख	ग	घ	ङ्	-	-	-
तालु	च	छ	ज	झ	ञ	श	य	
मूर्द्धा	ट	ठ	ड	ढ	ण	ष	र	
दन्त	त	थ	द	ध	ন	স	ল	
ओष्ठ	প	ফ	ব	ভ	ম	-	-	
-	-	-	-	-	ঁ	:	-	

(Ref <https://mycoaching.in/sanskrit-varnmala>)

माहेश्वर सुत्राणि

१. अ इ उ ण्,
२. ॠ लृ कृ,
३. ए ओ ङ्,
४. ऐ औ च্,

५. ह य व र ट्,
६. ल ण्,
७. ज म ड ण न म्,
८. झ भ ज्
९. घ ढ ध ष्
१०. ज ब ग ड द श्
११. ख फ छ ठ थ च ट त व्
१२. क प य्
१३. श ष स र्
१४. ह ल्

उदाहरण: अच् = प्रथम माहेश्वर सूत्र 'अइउण्' के आदि वर्ण 'अ' को चतुर्थ सूत्र 'ऐओच्' के अन्तिम वर्ण 'च्' से योग कराने पर अच् प्रत्याहार बनता है। यह अच् प्रत्याहार अपने आदि अक्षर 'अ' से लेकर इत्संजक च् के पूर्व आने वाले औं पर्यन्त सभी अक्षरों का बोध कराता है। अतः,

अच् = अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ।

इसी तरह हल् प्रत्याहार की सिद्धि जैसे सूत्र हयवरट के आदि अक्षर ह को अन्तिम १४ वें सूत्र हल् के अन्तिम अक्षर (या इत् वर्ण) ल् के साथ मिलाने (अनुबन्ध) से होती है। फलतः,

हल् = ह य व र, ल, ज म ड ण न, झ भ, घ ढ ध, ज ब ग ड द, ख फ छ ठ थ च ट त, क प, श ष स, ह।

उपर्युक्त सभी 14 सूत्रों में अन्तिम वर्ण (ए कृ ङ् च् आदि) को पाणिनि ने इत् की संज्ञा दी है। इत् संज्ञा होने से इन अन्तिम वर्णों का उपयोग प्रत्याहार बनाने के लिए केवल अनुबन्ध (Bonding) हेतु किया जाता है, लेकिन व्याकरणीय प्रक्रिया में इनकी गणना नहीं की जाती है अर्थात् इनका प्रयोग नहीं होता है।

वर्णविभाजनं

- ललना - ल् + अ ल् + अ न् + आ
- कृत्वा - क् + ऋ (ये स्वर है) त् + व् + आ
- भ्रमरः - भ् + र् (भ् के बाद) + अ म् + अ र् + अः
- गर्दभः - ग् + अ र् (द् के पहिले) + द् + अ भ् + अः
- आर्द्रता - आ र् + द् + र् (दुसरी बार) + अ त् + आ

म् नियम

- वाक्य के आखिर मे - म्
- अगला शब्द स्वर से चालु - म्
- अगला शब्द व्यञ्जन से चालु - (अनुस्वार)

नासिक

- 'दण्ड' - द के उपर अनुस्वार बोला जाता है लेकिन लिखते समय अगले अक्षर के वर्ग (row) अनुशर नासिक वर्ण लगाया जाता है
- दन्ताः, कंप (X) कम्प (✓), पड़क्षित, सङ्गति, शङ्करः, कण्टकं, दैनन्दिनी, शान्तिः, कम्बलम्, सम्मेलनम्

- इतर वर्ग (rows) अनुस्वार से लिखे जाते हैं - अंशः, सिंहः, कंसः

शब्द/पद

पदम् = प्रकृतिः (root, प्रातिपदिक) + प्रत्ययः (suffix)



नामपदं

	अकारान्तः	आकारान्तः	इकारान्तः	उकारान्तः	ऋकारान्तः	ईकारान्तः	ऊकारान्तः
पुलिङ्ग्	राम		मुनि	शिशु	नेतृ, पितृ		
स्त्रिलिङ्ग्		सीता	मति	धेनु	मातृ	नदी	वर्धू
नपुञ्सकलिङ्ग्	वन		वारि	मधु	धातृ		

सर्वनाम

pronouns, सर्वनामे

- Personal : अस्मद् (मी), युष्मद् (तु), एतद् (हे), तद् (ते)
- Demonstrative : इदम् (हे), अदस् (ते)
- Interrogative: किम् (काय)
- Relative : यद् (कोण)

पुंलिङ्गः

प्रातिपदिकम्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्	Meaning
एतद् -	एषः	एतौ	एते	This person Nearby
तद् -	सः	तौ	ते	He
इदम् -	अयम्	इमौ	इमे	This person
अदस् -	असौ	अमू	अमी	That person - far away
किम् -	कः	कौ	के	Who
भवत् -	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः	You
सर्व -	सर्वः	सर्वौ	सर्वे	All

स्त्रीलिङ्गः

प्रातिपदिकम्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्	Meaning
एतद् -	एषा	एते	एताः	This person Nearby
तद् -	सा	ते	ताः	SHe
इदम् -	इयम्	इमे	इमाः	This person
अदस् -	असौ	अमू	अमूः	That person - far away
किम् -	का	के	काः	Who
भवत् -	भवती	भवत्यौ	भवत्यः	You
सर्व -	सर्वा	सर्वे	सर्वाः	All

नपुंसकलिङ्गः

प्रातिपदिकम्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्	Meaning
एतद् -	एतत्	एते	एतानि	This (N) Nearby
तद् -	तत्	ते	तानि	It
इदम् -	इदम्	इमे	इमानि	This(N)
अदस् -	अदः	अमू	अमूनि	That (N) - far away
किम् -	किम्	के	कानि	Who
सर्व -	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	All

विशेषण

जो शब्द नाम / संज्ञा का वर्णन करता है, उसे विशेषण कहते हैं ।। विशेषण का लिंग, वचन और विभक्ती नाम के लिंग, वचन, विभक्ति के अनुसार होते हैं ।।

संख्यावाचकविशेषण

एक, द्वि, त्री, चतुर इन ४ संख्यावाचक विशेषण के विभक्ती पद उनके विशेषयोंके/नामोंके लिंग, वाचन, विभक्ती के अनुसार होते

क्रियापद

क्रियापद = धातु + विकरण प्रत्यय (गण) + प्रत्यय (?पदी, लकार, वाचन)

गण (10)

समूह १ - १, ४, ६, १०

समूह २ - २, ३, ५, ७, ८, ९

१ अ

४ य

६ अ

१० अय

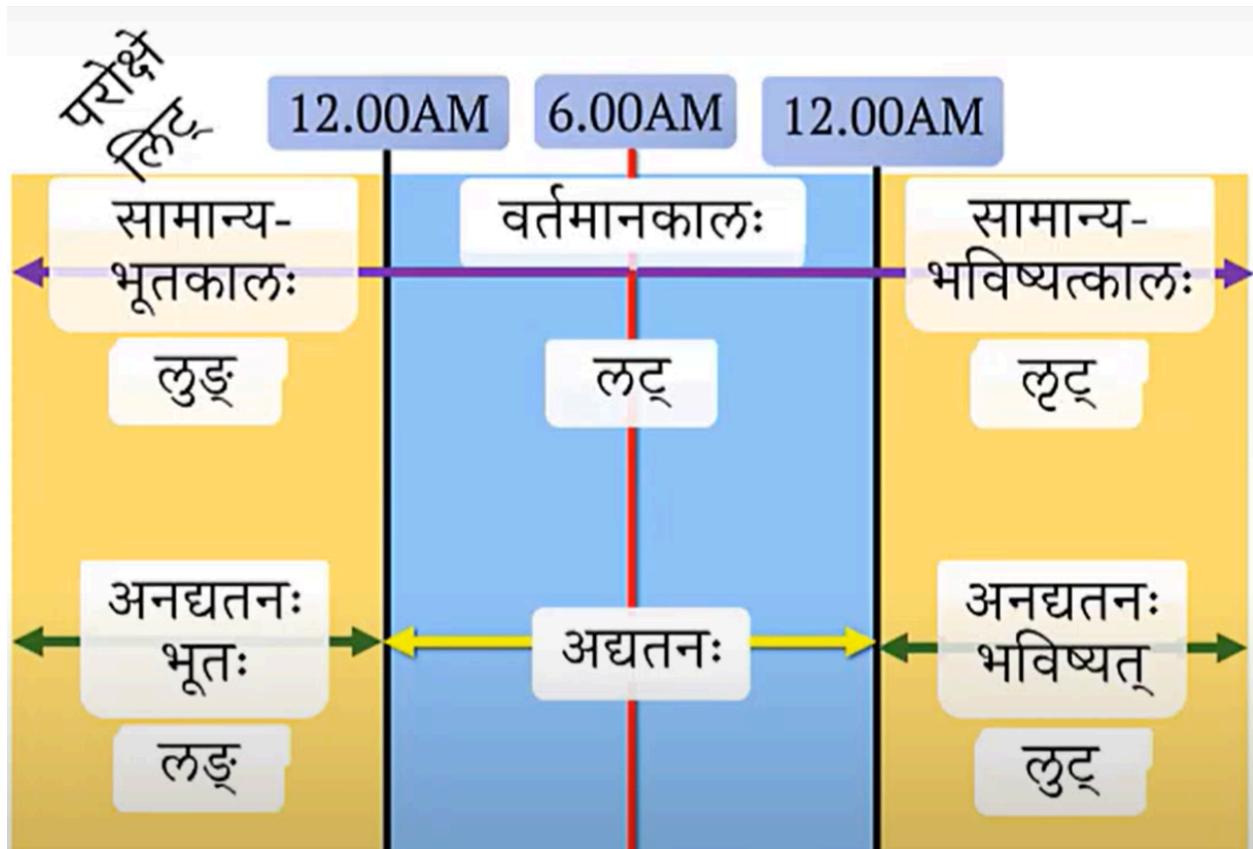
गणनाम Name of the gaṇa	गणस्य प्रत्ययः (विकरणप्रत्ययः) Vikaraṇa pratyaya	तद्रणे वर्तमानाः प्रसिद्धाः धातवः Few dhātus from the gaṇa	उदाहरणम् Examples
भ्वादिः	अ	भू , पठ्	पठ्-अ-ति
अदादिः	-	अस् , रुद्	अस्-(-)-ति
जुहोत्यादिः	-	दा , हु	ददा-(-)-ति
दिवादिः	य	नृत् , क्रुध्	नृत्-य-ति
स्वादिः	नु	शक् , चि	चि-नु-ते
तुदादिः	अ	लिख् , क्षिप्	लिख्-अ-ति
रुधादिः	न	भिद् , छिद्	भिनद्-ति
तनादिः	उ	कृ , तन्	कर-उ-ति
क्र्यादिः	ना	क्री , ज्ञा	जा-ना-ति
चुरादिः	अय	चुर् , कथ्	कथ्-अय-ति

गणनाम Name of the gaṇa	Approximate Number of Dhatus
भ्वादिः	1010
अदादिः	72
जुहोत्यादिः	24
दिवादिः	140
स्वादिः	34
तुदादिः	157
रुधादिः	25
तनादिः	10
क्र्यादिः	61
चुरादिः	410

APPROXIMATE
TOTAL = 1944

Source: Dhaturupanandini by Dr.
JanardanaHegde

लकार



अद्यतनः (today)

कालवाचक

- लट् लकार (वर्तमानकाल) पठति , (= वर्तमान काल) जैसे :- श्यामः खेलति । (श्याम खेलता हैं।)
- लड़लकार (प्रथम भूतकाल past earlier than current day अनद्यतन) अपठत् , आज का दिन छोड़ कर किसी अन्य दिन जो हुआ हो । जैसे :- भवान् तस्मिन् दिने भोजनमपचत् । (आपने उस दिन भोजन पकाया था।)
- लुड़लकार (सामान्य भूतकाल simple past) अपाठीत् , (= सामान्य भूत काल) जो कभी भी बीत चुका हो । जैसे :- अहं भोजनम् अभक्षत् । (मैंने खाना खाया।)
- लिट्लकार (परोक्ष भूतकाल you have not experienced it) पपाठ , (= अनद्यतन परोक्ष भूतकाल) जो अपने साथ न घटित होकर किसी इतिहास का विषय हो । जैसे :- रामः रावणं ममार । (राम ने रावण को मारा।)
- लुट्लकार (प्रथम भविष्यकाल अनद्यतन future beyond current day for sure) पठिता , (= अनद्यतन भविष्यत् काल) जो आज का दिन छोड़ कर आगे होने वाला हो । जैसे :- सः परश्वः विद्यालयं गन्ता । (वह परसों विद्यालय जायेगा।)
- लट्लकार (द्वितीय भविष्यकाल simple future) पठिष्यति, (= सामान्य भविष्य काल) जो आने वाले किसी भी समय में होने वाला हो । जैसे --- रामः इदं कार्यं करिष्यति । (राम यह कार्य करेगा।)

भाववाचक

Say, blessings may be for now or future. For request/command, it can be now or later, so not related to 'time' tense.

- लोट्लकार (आज्ञार्थ) पठतु, (= ये लकार आज्ञा, अनुमति लेना, प्रशंसा करना, प्रार्थना आदि में प्रयोग होता है।) जैसे :- भवान् गच्छतु । (आप जाइए) ; सः क्रीडतु । (वह खेले) ; त्वं खाद । (तुम खाओ) ; किमहं वदानि । (क्या मैं बोलूँ ?)
- लिङ् लकार
 - विधिलिङ् लकार(विध्यर्थ) पठेत् .., (= किसी को विधि बतानी हो।) जैसे :- भवान् पठेत् । (आपको पढ़ना चाहिए।) ; अहं गच्छेयम् । (मुझे जाना चाहिए।)
 - आशीर्लिङ् लकार (आशीर्वादार्थ) पठ्यात्, (= किसी को आशीर्वाद देना हो) जैसे :- भवान् जीव्यात् (आप जीओ) ; त्वं सुखी भूयात् । (तुम सुखी रहो।)
- लृङ् लकार (cause and effect with absence of action) (= ऐसा भूत काल जिसका प्रभाव वर्तमान तक हो) जब किसी क्रिया की असिद्धि हो गई हो। जैसे :- यदि त्वम् अपठिष्यत् तर्हि विद्वान् भवितुम् अर्हिष्यत् । (यदि तू पढ़ता तो विद्वान् बनता।)

उपसर्ग

उपसर्ग धातु से पहले लगते हैं

अति - अधिक

अधि - उपर

अनु - पिछे

अप - दूर, नीचे

अपि - आवरण घालणे

अभि - बाजू में

अव - नीचे

आ - विपरित

उत - उपर

उप - समीप

दुस/दूर - बुरा

नि - बाहर

नीर/निस - अभाव

परा - उलटा

परी - आस पास

प्र - आगे

प्रति - पीछे

वि - विरुद्ध

सम् - एकत्र

सु - अच्छा

प्रत्यय

“प्रकृतिप्रत्यययोजन एव भाषा”

Here the word “प्रकृति / prakṛti” represents all Verb roots & Nominal stems

Verb roots = “धातुः” - this category become words only after enjoining with “तिङ्” group of “प्रत्यय / pratyaya” (inflectional affixes)

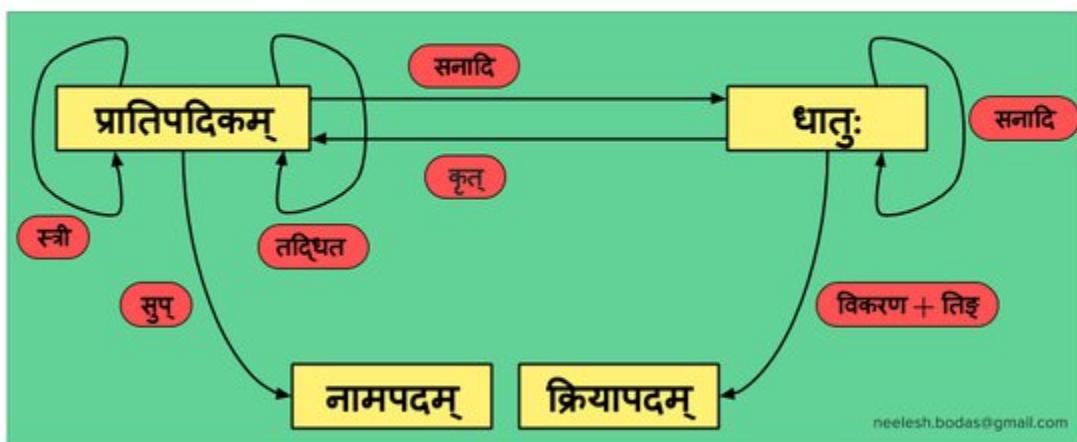
Nominal stems = “प्रातिपदिकम्” - this category become words only after enjoining with “सुप्” group of “प्रत्यय / pratyaya” (inflectional affixes)

The word “प्रत्यय / pratyaya” represents all kinds of inflections.

Every single “पदम् / padam” (“Word” loosely) in Sanskrit must have both the parts.

No word can be used without the appropriate Inflectional affix - this is a rule in Sanskrit
“Vyaakaranam” -- [“सुप्तिङ्न्तम् पदम्” - पाणिनीयं व्याकरणसूत्रम् १.४.१४]

प्रत्ययभेदः:



क्रियापदम् = धातुः + विकरण प्रत्ययः + तिङ्

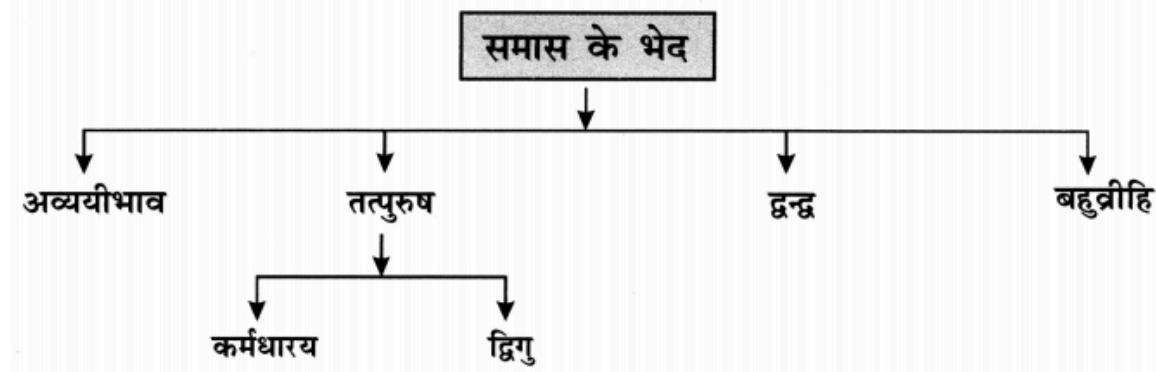
परस्मैपदप्रत्ययाः				आत्मनेपदप्रत्ययाः			
	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्		एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम- पुरुषः	ति॒प्	तस्	ज्ञि	प्रथम- पुरुषः	त	आता॒म्	ज्ञ
मध्यम- पुरुषः	सि॒प्	थस्	थ	मध्यम- पुरुषः	था॒स्	आथा॒म्	ध्वम्
उत्तम- पुरुषः	मि॒प्	वस्	मस्	उत्तम- पुरुषः	इ॒ट्	वहि	महिङ्

समास

दो या अधिक शब्द जोड़कर एक शब्द सन्धि में वर्णों का मेल होता है। समास में पदों का

समस्त पद
वृक्षपतिः

विग्रह
वृक्षात् पतिः



द्वन्द्व

इस समास के दोनों पद प्रधान होते हैं एवं एक दूसरे के विलोम होते हैं

अव्ययीभाव

इस समास में पहला पद अव्यय होने के साथ ही साथ प्रधान भी होता है। समास होने पर समस्त पद अव्यय बन जाता है तथा नपंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होता है

तत्पुरुष

उत्तर पद की प्रधानता होती है। इसके दोनों पदों में अलग-अलग विभक्तियाँ होती हैं। कहीं-कहीं पर दोनों पदों में समान विभक्ति भी होती है। ऐसी स्थिति में पूर्वपद की विभक्ति का लोप करके समस्त पद बनाया जाता है।

द्विगु

पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण होता है तथा समस्त पद किसी समूह को बोध होता है

कर्मधारय

पूर्व पद तथा उत्तर पद के मध्य में विशेषण-विशेष्य का संबंध होता है

बहुव्रीहि

दोनों पद अप्रधान हों और समस्तपद के अर्थ के अतिरिक्त कोई सांकेतिक अर्थ प्रधान

सर्वनाम

अव्यय

सन्धि

Phonetic transformation while joining the **sounds** (not script based).

संहिता closeness between sounds

संधिकार्य change in resultant sound due to संहिता

If new sound comes in place then that's called 'आदेशा/शत्रु', for coming of a new sound, it's called 'आगमा', if sound disappears it's called 'लोप'

सम् + धा - एकत्र करणे - पूर्वपद का अन्तिम वर्ण + उत्तरपद का पहिला वर्ण

स्वरसन्धयः

१. यणसन्धिः
२. यान्तवान्तादेशसन्धिः
३. सवर्णदीर्घसन्धिः
४. गुणसन्धिः
५. वृद्धिसन्धिः
६. पूर्वरूपसन्धिः
७. पररूपसन्धिः

व्यञ्जनसन्धयः

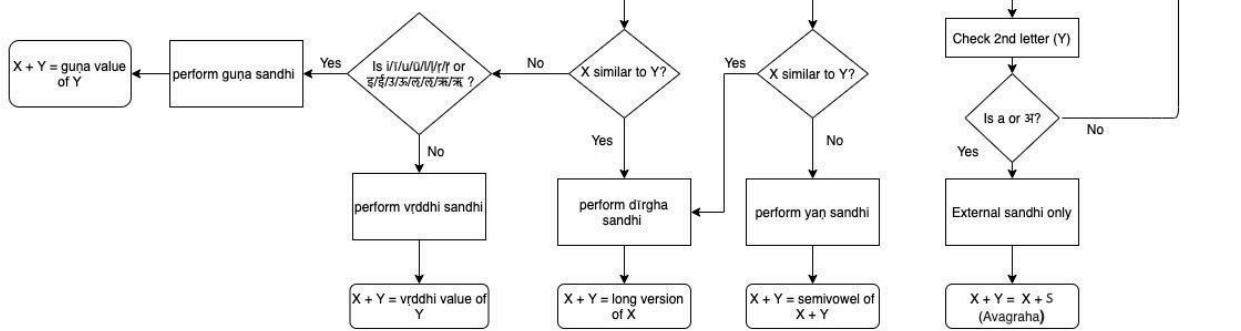
१. श्रुत्वसन्धिः
२. षुत्वसन्धिः
३. अनुनासिकसन्धिः
४. जश्वसन्धिः
५. चर्त्वसन्धिः
६. अनुस्वारसन्धिः
७. परस्वर्णसन्धिः
८. छत्वसन्धिः
९. पूर्वस्वर्णसन्धिः
१०. डमुडागमसन्धिः
११. तुगागमसन्धिः
१२. सत्वसन्धिः

विसर्गसन्धयः

१. लोपसन्धिः
२. उकागदेशसन्धिः
३. रेफादेशसन्धिः
४. सकागदेशसन्धिः
५. जिह्वामूलीवः उपथानीवश्च

[Go to Lessons](#)

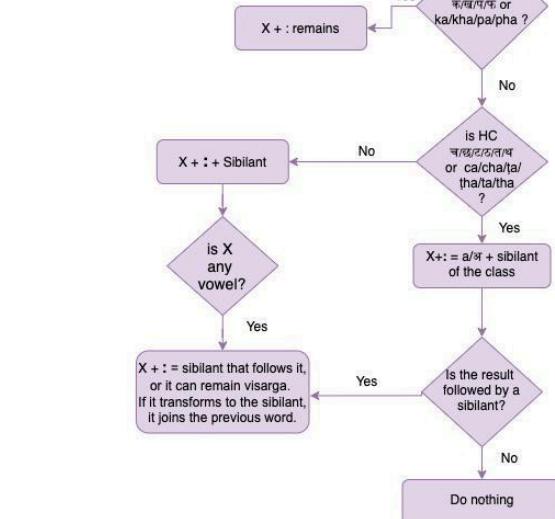
I. simple	II. dīrgha	III. guṇa	IV. vṛddhi	semivowels
a/ā	ā	a	ā	NA
i/ī	ī	ए	ऐ	य
u/ū	ū	ओ	औ	व
r/ṛ	ṛ	ar	ār	र
l/ḷ	ḷ	al	āl	ल
diphthongs				
ए				ay
ओ				av
ऐ				āy
औ				āv



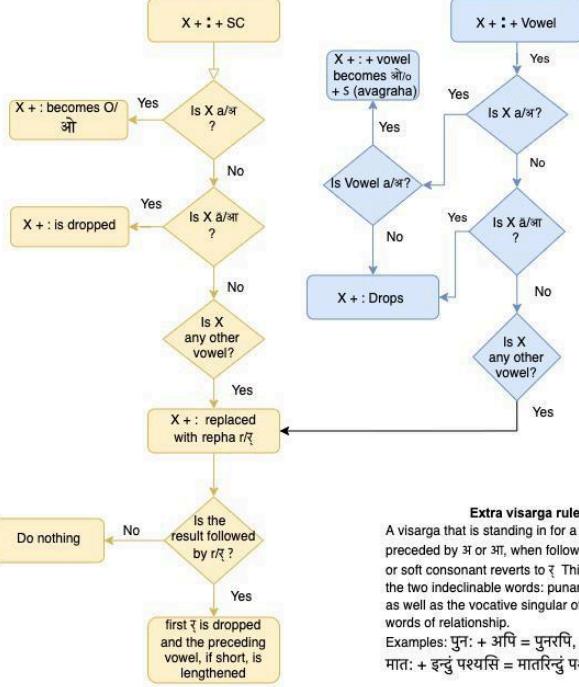
Exceptions

- If the first word ends in dual ending य, इ, or औ ending then you don't combine it. Keep in mind this doesn't apply to औ ending like rama॒u, this is a confusion from using the romanization.
 - If two vowels are left behind after a consonant or visarga sandhi operation those vowels don't combine.
 - following यावंतांदेश operations, the य and औ are optionally dropped and no further sandhi takes place. Keep in mind that the a or औ from the original change आय अ॒य and आय आ॒व stays.
 - आ॒वा at the end of word followed by a short औ is optionally not combined and the preceding vowel if long is made short.
 - brahmā** (सिः – brahmaर्षि) rule or **brahma** (सिः (the option)
 - sapta** (सिनाम – saptarsinाम (like guna) or **sapta** (सिनाम (the option)

क	ख	ग	घ	ङ	ह
का	खा	गा	ঘা	ঙা	হা
ক	খ	গ	ঘ	ঙ	হ
কা	খা	গা	ঘা	ঙা	হা
ত	থ	জ	ঝ	ঝ	ষ
তা	থা	জা	ঝা	ঝা	ষা
তি	থি	জি	ঝি	ঝি	ষি
তে	থে	জে	ঝে	ঝে	ষে
তি	থি	জি	ঝি	ঝি	ষি
তে	থে	জে	ঝে	ঝে	ষে
তি	থি	জি	ঝি	ঝি	ষি
প	ফ	ব	ভ	ম	ব
পা	ফা	বা	ভা	মা	বা
পি	ফি	বি	ভি	মি	বি
পে	ফে	বে	ভে	মে	বে
পি	ফি	বি	ভি	মি	বি
পে	ফে	বে	ভে	মে	বে



Visarga Sandhi



Extra visarga rule:
A visarga that is standing in for a র even when preceded by ম or আ, when followed by a vowel or soft consonant reverts to র. This is seen with the two indeclinable words: punar and prātar, as well as the vocative singular of ম ending words of relationship.
Examples: পুনঃ + অপি = পুনরংপি,
মাতঃ + ইন্দু পঞ্চসি = মাতারিন্দু পঞ্চসি

Exception:
sah/সঃ and esah/এসঃ follow the same rules as above, except that before all, including hard consonants, the visarga still drops off

स्वरसन्धि

अच्चसन्धिः

	अ	इ	उ	ऋ	लृ	ए	ओ	ऐ	औ
अ	आ	ए	ओ	अर्	अल्	ऐ	औ	ऐ	औ
इ	य्	ई	य्						
उ	व्	व्	ऊ	व्	व्	व्	व्	व्	व्
ऋ	र्	र्	र्	ऋ	ऋ	र्	र्	र्	र्
लृ	ल्	ल्	ल्	ऋ	ऋ	ल्	ल्	ल्	ल्
ए	अय्								
ओ	अव्								
ऐ	आय्								
औ	आव्								

सर्वर्णदीर्घसंधी

अ/आ + अ /आ = आ

इ/ई + इ / ई = ई

उ/ऊ + उ /ऊ = ऊ

गुण - संधी

अ /आ + इ /ई = ए

अ /आ + उ/ऊ = ओ

अ /आ + ऋ / ऋ = अर्

वृद्धि- संधी

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अ/आ + ओ /औ = औ

यण्- संधी

इ/ई + विजातिय स्वर = य्

उ/ऊ + विजातिय स्वर = व

ऋ / ऋ + विजातिय स्वर = र

अयवायाव- संधी

ए + स्वर = अय्

ऐ + स्वर = आय्

ओ + स्वर = ओव्

औ + स्वर = आव्

ए/ओ + अ = s

व्यञ्जनसन्धि

व्यञ्जन + व्यञ्जन

	वर्गस्य १,२, श्,ष्,स् =	वर्गस्य १ (चतुर्वासन्धिः)
वर्गीयव्यञ्जनम् +	स्वराः, वर्गस्य ३,४,५, य्,व्,र्,ल् =	वर्गस्य ३ (जश्त्वासन्धिः)
	वर्गस्य ५ =	वर्गस्य ५ (अनुनासिकसन्धिः)
सकारः / तर्वर्गः +	श् / चवर्गः =	श् / चवर्गः (श्वृत्वासन्धिः)
	ष् / टर्वर्गः =	ष् / टर्वर्गः (ष्ट्रृत्वासन्धिः)
तर्वर्गः +	ल् =	ल् / लँ (परस्वर्णसन्धिः)

म् +	व्यञ्जनम् =	अनुस्वारः (अनुस्वारसन्धिः)
अनुस्वारः +	वर्गीयव्यञ्जनम् =	वर्गस्य ५ (परस्वर्णसन्धिः)
	य्,व्,ल् =	यँ,वँ,लँ (परस्वर्णसन्धिः)

(वर्गीयव्यञ्जनाः - अनुनासिकाः) +	ह् =	वर्गस्य ४ (पूर्वसर्वांसन्धिः)
वर्गस्य १ +	श् =	छ् (छत्वसन्धिः)
हस्वस्वरः + ड्/ण्/न् +	स्वरः =	ड्/ण्/न् (डंमुडागमसन्धिः)
स्वराः +	छ् =	च् (तुगागमः)

विसर्गसन्धि

विसर्ग (ः)

